प्रश्न :- पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, अर्धप्रामाणिकता एवं अप्रामाणिकता के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के मत प्रस्तुत करते हुए अपना मत व्यक्त कीजिए ?

उत्तर :- शेषभाग :-

अर्धप्रामाणिकता के सम्बन्ध में :-

रासो को अर्धप्रामाणिक मानने वालों के तर्क के सम्बन्ध में विद्वानों का एक वर्ग ऐसा भी है, जो रासो को न तो पूरी तरह प्रामाणिक मानता है और न ही अप्रामाणिक। इनमें प्रमुख हैं आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, नरोत्तम स्वामी और डॉ० दशरथ शर्मा। इनका मत है कि रासो अर्धप्रामाणिक रचना है। इन विद्वानों के तर्कों को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है -

(1) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का मत है कि रासो की रचना-पद्धति 10 वीं शताब्दी के साहित्य से मेल खाती है। इसमें जिस संवाद शैली का सहारा लिया गया है वह कीर्तिपताका और संदेश रासक से मेल खाती है।

(2) रासो में सभी प्राचीन कथानक रूढ़ियों का पालन किया गया है, जो इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि इस ग्रंथ की रचना आदिकाल में ही हुई थी।

(3) पृथ्वीराज रासो की भाषा में 12 वीं शताब्दी की भाषा की संयुक्ताक्षरमयी अनुस्वारान्त प्रवृत्ति मिलती है, जिससे यह 12 वीं शती की रचना सिद्ध होती है।

(4) द्विवेदी जी का यह भी कहना है कि रासो की रचना शुक-शुकी संवाद के रूप में हुई थी, अतः जिन सर्गों का प्रारम्भ शुक-शुकी संवाद से हुआ है, वे ही प्रामाणिक हैं। इस आधार पर उन्होंने अपने द्वारा सम्पादित "संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो" में इन प्रसंगों को ही स्थान दिया है। —

(i) आरम्भिक अंश (ii) इंछिनी विवाह (iii) शशिव्रता विवाह (iv) तोमर पाहार का शहाबुद्दीन को पकड़ना (v) संयोगिता विवाह (vi) कैमास वध (vii) गोरि वध

(5) आचार्य द्विवेदी ने रासो को अर्धप्रामाणिक रचना मानते हुए यह स्वीकार किया है कि इसमें इतिहास और कल्पना का मेल किया गया है— " सभी ऐतिहासिक कहे जाने वाले काव्यों के समान इसमें भी इतिहास और कल्पना का 'फैक्ट' और 'फिक्शन' का मिश्रण है। सभी ऐतिहासिक मानी जाने वाली रचनाओं के समान इसमें भी काव्यगत और कथानक प्रचित रूढ़ियों का सहारा लिया गया है। इसमें भी रस-सृष्टि की ओर अधिक ध्यान दिया गया है, संभावनाओं पर अधिक बल दिया गया है और कल्पना को महत्वपूर्ण रूप से स्वीकार किया गया है।"

उदयपुर के कविराव मोहन सिंह ने रासो के प्रामाणिक अंशों को खोजने का एक अलग उपाय बताया है। उनके अनुसार रासोकार ने अपने द्वारा प्रयुक्त छंदों के बारे में स्वयं लिखा है—

छंद प्रबंध कवित्त यति साटक गाह दुहत्थ।
लघु गुरु मंडित खंडि यह पिंगल अमर भरत्थ॥

अर्थात (मेरे प्रबन्ध काव्य रासो में) कवित्त (षटपदी) साटक (शार्दूल विक्रीड़ित), गाहा (गाथा) और दोहा नामक छंद प्रयुक्त हुए हैं, जिनमें मात्रादि नियम पिंगलाचार्य के अनुसार हैं और संस्कृत (अमरवाणी) के छंद भरत के मतानुसार हैं,

मोहनसिंह जी का मत है कि यही चार छंद रासो के मूल छंद हैं बाकी सभी प्रक्षिप्त हैं। उनका मत है कि इस बात को स्वीकार कर लेने पर रासो की ऐतिहासिकता पर

आँच नहीं आयेगी, परन्तु यहाँ यह कैसे मान लें कि प्रक्षेप करने वालों ने इन छंदों में रचना न की होगी। रासो के अशुद्ध संवत् दोहा और छप्पय छंदों में भी हैं, अतः इस मत को समीचीन नहीं कहा जा सकता।

(शेष बचा है)

पता :-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग - हिन्दी (D.A.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
दिनांक - 24.02.2022
मो० नं० - 7909046087